Haryana Government Gazette

Published by Authority

© Government of Haryana

No. 15–2026] CHANDIGARH, MONDAY, APRIL 13, 2026 (CHAITRA 23, 1948 SAKA)

PART-I

Notifications, Orders and Declarations by Haryana Government

हरियाणा सरकार

विरासत तथा पर्यटन विभाग

अधिसूचना

दिनांक 01 अप्रैल, 2026

संख्या 12/250–2025/पुरा/1056.– हरियाणा प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल तथा अवशेष अधिनियम, 1964 (1964 का पंजाब अधिनियम 20) की धारा 4 की उपधारा (3) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए तथा हरियाणा सरकार, विरासत तथा पर्यटन विभाग, अधिसूचना संख्या 12/250–2025/पुरा/4876–85, दिनांक 11 दिसंबर, 2025 के प्रतिनिर्देश से, हरियाणा के राज्यपाल, इसके द्वारा, नीचे दी गई अनुसूची के खाना 1 में विनिर्दिष्ट प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारकों को संरक्षित संस्मारक के रूप में तथा उक्त अनुसूची के खाना 2, 3, 4, 5, 6 तथा 7 में यथा विनिर्दिष्ट पुरातत्वीय स्थलों और अवशेषों को संरक्षित क्षेत्र के रूप में घोषित करते हैं:–

अनुसूची

प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक का नाम	पुरातत्वीय स्थलों तथा अवशेष का नाम	गांव/शहर का नाम	तहसील/जिला का नाम	संरक्षणाधीन राजस्व खसरा/किला संख्या	संरक्षित किया जाने वाला क्षेत्र कनाल–मरला	स्वामित्व	विशेष कथन
1	2	3	4	5	6	7	8
बाबू बाल मुकुंद की विरासती हवेली	बाबू बाल मुकुंद की विरासती हवेली	गुड़ियानी	कोसली/रेवाड़ी	लाल डोरा	361.73 वर्ग मीटर	ग्राम पंचायत	गुड़ियानी एक समृद्ध इतिहास वाला गाँव है, जो विशिष्ट वस्तुओं और समुदायों के लिए जाना जाता है। यह हवेली गाँव की सांस्कृतिक गतिशीलता, विशेष रूप से शिक्षा के संबंध में, को उजागर करता है और बाल मुकुंद गुप्त जिनका जन्म 1865 में हुआ, को महाजन समुदाय के एक अग्रणी व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है, जिन्होंने शिक्षा को अपनाया और अपने समय की ऐतिहासिक घटनाओं से प्रभावित होकर एक प्रमुख लेखक और देशभक्त बने। इस गाँव में रहने वाले दो प्रमुख समुदाय थे। जो ''अफगान'' घोड़ों के व्यापारी और महाजन जो छोटे–मोटे व्यवसाय करते थे और साहूकारी करते थे। बहुसंख्यक अफगानों ने अपने बच्चों को उर्दू और फारसी भाषा में शिक्षा लेने के लिए प्रोत्साहित किया, लेकिन महाजनों ने नहीं। बालमुकुंद गुप्त महाजन समुदाय के

							पहले बालक थे, जिन्होंने उर्दू और फारसी भाषा में शिक्षा प्राप्त की। बालमुकुंद के पूर्वज रोहतक जिले के डीघल से झज्जर और फिर कोसली चले गए थे। यहीं से वे व्यवसाय की तलाश में फैल गए। गोवर्धन दास के नेतृत्व में एक शाखा गुड़ियानी में बस गई। गोवर्धन के दो बेटे थे, जिनमें से एक की युवावस्था में ही मृत्यु हो गई और दूसरे पूरण माई ने पारिवारिक व्यवसाय संभाला। इस पूरण माई के तीन बेटे और दो बेटियाँ थीं। सबसे बड़े बेटे का नाम बालमुकुंद गुप्त था, जिसे 1875 में दस साल की उम्र में स्कूल भेजा गया था। बालमुकुंद गुप्त की उर्दू और फारसी भाषा पर पकड़ अद्भुत थी। उनके गुरु, मुंशी वजीर मुहम्मद खान और बरकत अली ने उन्हें ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने उन्हें लेखन के लिए भी प्रोत्साहित किया। उन दिनों कविताएँ लिखना एक प्रचलित चीज थी। पास का झज्जर शहर, जो कभी एक मुस्लिम नवाब का गढ़ था, मुशायरों की परंपरा का गौरव प्राप्त था। बालमुकुंद की ''शाद'' (खुशी) उपनाम से लिखी कविताएँ झज्जर के मुशायरों में सुनाई जाती थीं और तालियाँ बटोरती थीं। उन्होंने गुलदस्तों के लिए भी लिखना शुरू किया, जो उस समय भी प्रचलित थे। इन गुलदस्तों के बारे में बालमुकुंद ने बाद में लिखा। बालमुकुंद गुप्त को उनके कार्य जैसे लेख, खासकर ''मिस्टर हिंदी'' उपनाम से लिखे गए लेख और अवध पंच में हल्के–फुल्के छंदों ने उन्हें पहचान दिलाई।

अमित कुमार अग्रवाल,
आयुक्त एवं सचिव, हरियाणा सरकार,
विरासत तथा पर्यटन विभाग।

HARYANA GOVERNMENT

HERITAGE AND TOURISM DEPARTMENT

Notification

The 1st April, 2026

No. 12/250-2025/pura/1056.— In exercise of the powers conferred under sub-section (3) of section 4 of the Haryana Ancient and Historical Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1964 (Punjab Act 20 of 1964), and with reference to Haryana Government Heritage and Tourism Department, notification No. 12/250-2025/pura/4876-85, dated the 11th December, 2025, the Governor of Haryana hereby declares the ancient and historical monument specified in column 1 of the Schedule given below, to be a protected monument and archaeological site and remains as specified in columns 2, 3, 4, 5, 6 and 7 of the said Schedule to be a protected area:-

SCHEDULE

Name of ancient and historical monument	Name of archaeological sites and remains	Name of village/ city	Name of tehsil / district.	Revenue Khasra/ Kila number under protection.	Area to be protected Kanal-Marla	Ownership	Remarks
1	2	3	4	5	6	7	8
Babu Bal Mukund's Heritage Mansion	Babu Bal Mukund's Heritage Mansion	Guriani	Kosli/ Rewari	Lal Dora	361.73 sq. metre	Gram Panchayat	Guriani is a village with a rich history, known for specific commodities and communities. This Mansion highlights the cultural dynamics within the village, particularly regarding education, and introduces Bal Mukund Gupta born in 1865, as a pioneering individual from the Mahajan community who embraced education and became a prominent writer and patriot, influenced by the historical events of his time. The two principal communities that

							resided in this village were the "Afghan" traders in horses and the Mahajans who carried on petty business and did money lending. The Afghans who constituted a majority encouraged their children to go for education in Urdu and Persian, but not the Mahajans. Balmukund Gupta was the first child of the Mahajan community to go for education in Urdu and Perisan language. Balmukund's ancestors had migrated from village Dhigal (Rohtak District) to Jhajjar District and then on to Kosli (District Rewari). From here, they spread out in search of business. One branch headed by Govardhan Das had settled down in Guriyani. Govardhan had two sons, one of whom died in his youngest and the other one Puran Mai carried on the family business. Puran Mai had three sons and two daughters. The eldest son was Balmukund Gupta, who was sent to school in 1875 at the age of ten. Balmukund Gupta's command of Urdu and Perisan was enviable. His teachers, Munshi Wazir Muhammad Khan and Barakat Ali encouraged him in the pursuit of knowledge. They encouraged him to write too. The thing in vogue in those days was to compose poems. The close by town of Jhajjar, once the seat of a Muslim Nawab, boasted of a tradition of mushairas. Balmukund's poems written under the pen name of "Shaad" (happiness) were recited at mushairas in Jhajjar and drew applause. He also started writing for the guldastas, which were also in vogue at that time. Balmukund Gupta recognized for his work like articles, especially those under the pen-name of "Mr. Hindi" and light verses in Oudh Punch.

AMIT KUMAR AGRAWAL,
Commissioner & Secretary to Government, Haryana,
Heritage and Tourism Department.

12518—C.S.—H.G.P., Pkl.